International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

संताली नाटक का उद्भव और विकास : एक अध्ययन

गुना हेम्ब्रम

शोधार्थी (संताली विभाग), कलिंगा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज, किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा

सारांश :

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यिक दर्पण में ही समाज का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नाटक भी साहित्य का दर्पण है। इसलिए नाटक में समाज के अच्छी- अच्छी चीजें पाई जाती हैं। नाटक सामाजिक एकता को बनाए रखने, कुरीतियों को समाप्त करने, संस्कृति को संरक्षित करने और भाषा को प्रसार करने का एक बेहतरीन तरीका है। नाटक, साहित्य का एक अभिन्न हिस्सा है। साहित्य में नाटक ही सर्वश्रेष्ठ है। साहित्यिक विधाओं में समकालीन लेखकों ने विभिन्न पात्रों द्वारा सामाजिक, परंपराओं, जातीयता, धर्म, रीति-रिवाजों और विचारों को एक ही कहानी के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की हैं। जो नाटक के द्वारा ही संभव हो सकता है। हैं। संताली भाषा में नाटक को 'गायान' कहा जाता हैं।

बीज शब्द : संताली, साहित्य, नाटक, समाज, उद्भव, विकास।

परिचय :

व्यक्ति अपने विचार या भावनाएँ दूसरों के सामने व्यक्त करना चाहतें है। चाहे विचार या भावनाएँ कुछ भी हो. क्योंकि, मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। समुदाय में कई अलग-अलग प्रकार के लोग रहते हैं। यहां सभी प्रकार के लोग किसी न किसी तरह से जुड़े हुए हैं। यह संयोजन अपने आप में अनेक प्रकार की भावनाओं को जन्म देता है। वह भावना मन में विचार लाती है। लेकिन वह विचार क्षण भर में भूल जाता है। जब यह भावना अपने आप में समाहित नहीं होती, तब अभिव्यक्ति प्रसारित होती है। मन के इस विचार को लिख कर रखने से आने वाले कई पीढ़ी तक संरक्षित रखा जा सकता है। इससे कई पीढ़ियों को लाभ हो सकता है। प्राचीन काल से जो लोककथा, लोकगीत, लोकगाथाएं, पौराणिक कथाएं, झारनी, बांखेड़, कुदुम, जादू-टोना, मंत्र, चमत्कार आदि, हमें मिला है, जिसे लोक साहित्य कहा जाता है। आधुनिक लेखकों ने इस लोक साहित्य को पढ़कर, देखकर और सुनकर अपनी कलम से कविताएं, निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, इत्यादि लिखकर लिखित साहित्य का सृजन किया। साहित्य, नाटक से समृद्ध होने वाली चीजों में से एक है। इसलिए साहित्य एक सामाजिक संपत्ति है। वह साहित्यिक रूप जिसमें लेखक अपने हृदय की भावनाओं को पात्रों के माध्यम से व्यक्त करता है । बोलकर, गाकर और नृत्यकर यदि एक ही कहानी को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, उसे नाटक कहते हैं। संताली भाषा में नाटक को 'गायान' कहा जाता हैं।

नाटक की परिभाषाएँ :

नाटक के बारे में अनेक लेखकों ने अपने तरीके से विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। कुछ लेखकों ने इस प्रकार परिभाषा दी हैं। जैसे-

भोगला सोरेन के अनुसार - "[illegible]

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ᱣᱟᱠᱛᱮᱨ ᱥᱮᱨᱮᱧᱮ ᱮᱛ ᱩᱫᱩᱜᱚᱜᱽ ᱟ ।"[1] अर्थात "यदि एक ही कहानी को विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिनेताओं द्वारा बोलकर, गाकर, नृत्यकर प्रस्तुत किया जाता है, तो वह नाटक है।"

Prabhanjan Mane के अनुसार- "A Play is a literary work or a composition which delineates life and human activity by means of presenting various actions of - and dialogues among – a group of characters."[2] अर्थात "नाटक एक साहित्यिक कृति या रचना है जो पात्रों के एक समूह के विभिन्न कार्यों और उनके बीच संवादों के माध्यम से जीवन और मानव गतिविधि को चित्रित करता है।"

डॉ. के.सी. टुडू के अनुसार**-** "काथाय जाँहा गायान स्टेज रे बाङ उदूगो: आ ओना दो गायान दो बांङकाना । ड्रमाटिस दो थियेटर लागित् को ओला मेनखान ओनोलिया दो पाड़हाव लागित् को ओला ।"[3] अर्थात "जो नाटक मंच पर नहीं दिखाए जाते, वे नाटक नहीं हैं। नाटककार रंगमंच के लिए लिखते हैं, लेकिन लेखक पढ़ने के लिए लिखते हैं।"

इन लेखकों की परिभाषा भले ही अलग-अलग हो, लेकिन अर्थ एक है। इन लेखकों के शब्दों को संयोजन कर देखा जाए तो ऐसा होगा- "जब किसी मंच पर बातचीतकर, हँसकर, नृत्यकर और गाकर किसी व्यक्ति के चरित्र का अनुसरण करने के लिए किया जाता है, उसे गायान (नाटक) कहते हैं।" अर्थात नाटक का मतलब ऐसे लोगों के चरित्र का अनुसरण करना है जो अलग-अलग भावनाओं और परिस्थितियों से भरे होते हैं।

संताली नाटक का उद्भव :

गायान (नाटक) साहित्य का एक अभिन्न हिस्सा है। इसे देखा, सुना और पढ़ा जा सकता है, तथा साहित्य के सभी गुण और शैली पाए जाते हैं इसलिए इसे मिश्रित साहित्य कहा जाता है। गायान (नाटक) अक्सर जीवन की घटनाओं या अनुभवों पर आधारित होती हैं। हालाँकि, यह कहना मुश्किल है कि संताली गायान (नाटक) का उद्भव कब हुआ है। संताली साहित्य के नाटक का उद्भव जानने के लिए भारत के अन्य साहित्य में घटित हुए प्रारंभिक ऐतिहासिक तथ्यों को जानना आवश्यक है। भारत का प्राचीन या प्रसिद्ध साहित्य संस्कृत है। संस्कृत साहित्य में नाटक अत्यन्त समृद्ध है। संस्कृत भाषाविदों के मतानुसार भारत के लोग ज्यादा देवी-देवों पर विश्वास रखते हैं, संसार में निर्मित प्रत्येक वस्तु देवी-देवों द्वारा निर्मित मानी जाती है। **डॉ. साकेत कुमार** के अनुसार- "पौराणिक मान्यता के अनुसार नाटक में ऋग्वेद से 'संवाद', सामवेद से 'गान', यजुर्वेद से 'नाट्य और अर्थोवेद से 'रस' लिया।"[4] त्रेता युग में देवों और मानवों एक साथ सृष्टिकर्ता के पास पहुंचे और उनसे अनुरोध किया कि वे हम सबको आनंद लेने के लिए कुछ प्रदान करें। तब सृष्टिकर्ता ने मानव जाति के अनुरोध को सुनकर चारों वेदों में से प्रत्येक से एक पदार्थ का चयन किया। ऋग्वेद से- नृत्य, सोमवेद से- गान, यजुर्वेद से- नाट्य और अर्थोवेद से- रस, यह सब जोड़कर "नाट्य वेद" की रचना हुई। विश्वकर्मा ने स्वर्गलोक में देवों के लिए एक "रंगशाला" और पृथ्वी में मानवों के आनंद के लिए एक "नाटक शाला" बनाई। यद्यपि संस्कृत नाट्य साहित्य समग्र रूप से अपने आप में पूर्ण होने के बावजुद भी नाटकों के प्रारंभिक ऐतिहासिक विवरण अस्पष्ट हैं। कई विद्वान लेखक और साहित्यिक आलोचक इस तथ्य पर आम सहमति नहीं बन पाए हैं। बहुत से विद्वान लेखक और साहित्यिक इस बात से सहमति नहीं हैं कि नाटक का उद्भव 'नाट्य वेद' से हुआ है। **डॉ. स्वाति पांडे** के अनुसार- "नाटकों की उत्पत्ति भारत तथा पाश्चात्य देशों में ऋतु परिवर्तन तथा धार्मिक पर्वों के अवसर पर हुआ है।"[5] नाटकों की शुरुआत ऋतु परिवर्तन और धार्मिक त्योहारों से उत्पत्ति हुई है इसको इनकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि अलग अलग ऋतु में अलग अलग धार्मिक त्योहारों होता है। प्रत्येक धार्मिक त्योहारों में अलग तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता हैं। **डॉ. स्वाति पांडे** के अनुसार- "कुछ विद्वान नाटक की व्युत्पत्ति 'वीर -पूजा' से मानते हैं। जब मानव समाज अत्यंत प्रारंभिक अवस्था में था। वे अपने बाल– बच्चों की प्राणरक्षा तथा धन -धन्य की संवृद्धि के लिए अनेक प्रकार के धार्मिक उत्सव मानते थे जिसमे नृत्य, संगीत और वाद्य के साथ वे अपने पूर्वजों का स्वागत करते थे जिसे 'वीरपूजा' कहा जाता था। यह वीर पूजा सम्पूर्ण विश्व नाट्य – साहित्य का परंभिक स्वरूप है ।"[6] संतालों का भी मानना है कि नाटक की व्युत्पत्ति 'वीर-पूजा या "बुरु-बोंगा" जिसे सेंदरा बोंगा कहा

जाता है उसे हुआ है। जब मानव समाज शिकारी अवस्था में था। तब से, वे अपने बच्चों के जीवन बचाने के लिए विभिन्न उपकरण तीर, धनुष, कापी, तारवड़े प्रदान करने हेतु विभिन्न पारंपरिक त्योहार मनाते आ रहे हैं जो सेंदरा (शिकार) कहते थे । जहां वे अपने प्रतिद्वंद्वियों का स्वागत नृत्य, गान और संगीत वाद्ययंत्र तिरयो, बानाम, बजाकर करते थे, उसे सिंगराय एनेज (सिंगराय नृत्य) कहा जाता था। यह संसार के नाटक साहित्य का प्रारंभिक रूप है। **विजय कुमार साव** के अनुसार- "नाट्य का उद्भव मनुष्य की प्रकृति, आनंद, प्रमोद, रंग -पिपासा था उसके शमन की जरूरत के तहत हुआ है। जितना मनुष्य का इतिहास प्राचीन है, उतना ही नाटक का है ।"[7] धरती में मानव की सृष्टि के बहुत बाद, जब मनुष्य ने पढ़ना लिखना सीखा तब 'नाट्य वेद' की रचना हुई। मानव की प्रकृति, आनंद, उत्साह, रंग-प्यास को शांत करने की आवश्यकता के तहत नाटक का उद्भव हुआ। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा की, मानव जाति का इतिहास जितना प्राचीन है, नाटक का इतिहास भी उतना ही पुराना है।

संताली नाटक की उत्पत्ति को समझने के लिए हमें लोगों की प्रारंभिक जीवन शैली पर गौर करना होगा। धरती के सृष्टि की कहानी पुरातत्वविदों के शब्दों से मिलती है। साथ ही पृथ्वी पर सभी वनस्पतियाँ, जैसे जंगल, झाड़ियाँ, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, नदियाँ, नाले, समुद्र, जानवर, मनुष्य और स्वर्ग में रहने वाले सभी देवी, देवता शामिल हैं। आकाश में सूर्य, चंद्रमा, ग्रह और तारे, होते है। इन सबसे संतालों के गहरे रिश्ते जुड़े हुए हैं। इसीलिए उन्हें कुदुमों में, कहानियों में, विनतीयों में, बाखेड़ों में, झारनीयों में, मानतारों में, कहावतों में, पहेलियों में, उन सबों का अनुसरण किया जाता है। उन्होंने हरे-भरे जंगलों और पहाड़ों से सजे दुनिया के एकांत मैदान स्थानों में अपना घर बनाकर, खुशी, आनंद और प्रसन्नता के साथ अपने दिन बिताए हैं। उन्होंने अपने जीवन के साथ घटित सभी घटनाओं को अपने दिल से महसूस किया और बहुत निकट अपनी आंखों से देखा है, अपने कानों से सुना है, तथा अपनी मानसिक आत्मा को शांति के लिए अपने देवी-देवता माराङ बुरु और जाहेर आयो के समक्ष प्रार्थना की है। उन्हें उन घटनाओं की खुशियों, दुखों, चिंताओं, निराशाओं, उपस्थितियों के बारे में महसूस किया। उन्होंने खुशियों पर हँसे और शोक में आँसू बहाये हैं। उन्होंने जंगली जानवरों से बचने के लिए तीर-धनुष से लड़े। वे जीविका के लिए खेती करते थे। यह सब जीवन में अनुभव की गई घटनाओं का एक खेल जैसा लगता है। उन्होंने अपनी पहचान बनाए रखने के लिए लोक-संस्कृति, रीति-रिवाजों बचाए रखने के लिए समाज का निर्माण किया। इस समाज की संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराएं विभिन्न नृत्य और संगीत से जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं की संताली नाटक का उद्भव जीवन में अपने साथ घटित घटनाओं का अनुभव, संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराएं के विभिन्न नाच, गान के माध्यम से हुआ है, जैसे-

1. चाँपाकिया बाड़ेबुटा
2. सिंगराय आखड़ा
3. गिदरा एनेजजोङ
4. सांगे बारयात
5. रूम डाकाव आखड़ा
6. ठेंगा गाड़ी एनेज

1. **चाँपाकिया बाड़ेबुटा-** संतालों के पौराणिक लोककथाओं के अनुसार 'हिहिड़ी-पिपीड़ी' में मानव के पूर्वज पिलचू हाड़ाम एवं पिलचू बुढ़ही का जन्म हुआ था। पिलचू दम्पति के सात पुत्र और सात पुत्री थे। जब ये लोग जब जवान हुए तो उन्होंने सुड़कुज़् जंगल के चाँपाकिया बरगद पेड़ के नीचे खेलकर, गाकर, नृत्यकर एवं विभिन्न प्रकार के शैली को अपनाकर एक दूसरे को आकर्षित किया और वे सब अनजाने में विवाह स्थापित किया। यह एक नाटक के दृश्य जैसे ही लगता है।
2. **सिंगराय आखड़ा-** संताल समाज के परंम्परा अनुसार प्रत्येक वर्ष शिकार पर्व का आयोजन किया जाता है। शिकार में सम्मलित होने के लिए आस-पास के ग्रामीणों को एक निमंत्रण देते है जिसे 'गिरा' कहते हैं। शिकार को संताली में

सेंदरा कहा जाता है, जिसका शब्दिक अर्थ- खोजना, तलाश करना, पता लगाना, छान-बीन करना होता है। शिकार सिर्फ जंगली जानवरों को मरने के लिए नहीं किया जाता है बल्कि घर के पालतू जानवर जैसे-गायें, बैल, मुर्गा, भेड़ें, बकरीयों सुवरों और अपने स्वयं का भी इलाज के लिए जंगलों से जड़ीबूटी दवाएं खोजकर लाने के लिए भी होता है। देश जितना भी विकसित क्यों ना हो दवायाँ किसी खादान से प्राप्त नहीं होते, दवाई सिर्फ पेड़-पौधे के छाले, जड़े, पत्तें फलों, फूलों से ही तैयार किया जाता है। शिकारीयों को आराम करने का एक जगह होता है जिसे 'सुताम् टाडी' या 'गीपितिज़् टाडी' कहा जाता है। इसी सुताम् टाडी' में ही संताल समाज का अंतिम दरबार संपन्न होता है जिसे लो-बीर दरबार या लो-बीर बैसी कहा जाता है। संताल समाज अपने आप में उस दरबार को उच्चतम् न्यायालय मानते है। 'सुताम् टाडी' या 'गीपितिज़् टाडी' में थकान दूर करने केलिए रात को सिंगराय एनेज (सिंगराय नृत्य) होता है। वहाँ पर उपस्थित कुछ शिकारियों लड़की का रूप धारण कर समाज की कुछ चित्रण को उठा कर नाचते और गाते है, यह एक नाटक जैसे ही लगता है।

3. **गिदरा एनेजजोङ-** गाँव घर के गाली महल्ला में जब बच्चे बचपन में खेलते कूदते हैं, तो उन्हें बहुत अच्छे लगते है। पहले जमाने में जब गाली महल्ला में बालू और रेत् से भरे होते थे, उस समय बच्चे वहाँ पर बालू से घर बनाते थे। खेत बनाके खेती करते थे। पत्ता तोड़ कर पत्ते से एक लड़का और एक लड़की का गुड़ये (खिलौने) बनाते थे, तथा आपस में शादी करा देते थे। इस प्रकार अनेक तरह के खेल खेलते है। ये बच्चों के खेलों से नाटक के उद्भव रूप देखा जा सकता है।
4. **सांगे बारयात-** संताल समाज में विवाह भी जीवन का एक प्रमुख संस्कार हैं। विवाह के बिना जीवन अधूरा रहता है। संताल समाज में विवाह कोई प्रकार के होते हैं। सांगे बारयात भी एक प्रकार का विवाह है। यह विवाह वर के घर मे होता है। वर पक्षवाले कन्या को लाने के लिए केवल बारात जाते हैं। कन्या घर के आँगन में वर पक्ष की ओर से एक बारात को दूल्हा की तरह सजाया जाता है तथा कन्या पक्ष की ओर से एक लड़का को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। वे दोनों उसी शादी समहरों में माडवा पर उपस्थित सभी मेहमानों को पानी, शरबत हाड़ीया, सिगरेट परिवेशण करते हैं तथा वे दोनों मेहमानों को हँसाने के लिए बीच-बीच में जोक के साथ अभिनय करते हें। यह शादी समारोह रंगमंच जैसे लगते हैं।
5. **रूम डाकाव आखड़ा-** संताल समाज के लोग कृषि पर निर्भर करते हैं। जब धरती पर समय से बारिश नहीं होती है तब बारिश होने के लिए मारांङ बुरु, जाहेर आयो, मोडेको, तुरूयको और लिटागोंसाई को आह्वान करते हैं। जिसे रूम डाकाव आखड़ा कहते हैं। धरती में बारिश होने के लिए ग्रामीणों उन देवी देवताओ से अनुरोध करते हैं। उस समय जिस व्यक्ति के पास देवताओं सवार होते है, वह अलग तरह हरकते करने लगते हैं। इन हरकते भी एक तरह नाटक जैसे लगते हैं।
6. **ठेंगा गाड़ी एनेज-** संताल समाज के अनुसार पुस चांदो (पुस माह) में होने वाले मकर संक्रांति को संताल समुदाय भी बाड़े धूम धाम से मानते है। संताल समुदाय इस पर्व को 'साकरात पाराब' या 'पुस पाराब' कहते है। इस पर्व को पाँच दिन मानते है। प्रथम दिन को 'उम माहां' कहते है, उस दिन घर-द्वार, कपड़ा लता की साफ साफाय होता है तथा होलोंङ (अरवा चावल का गुंडी) तैयार की जाती हैं। दूसरा दिन को 'बावड़ी माहां' कहते है उस दिन सुबह पूर्वजों के नाम भीतार में हाडी चोडोर (हाड़ीया पूजा) करते है तथा जिल पीठा (मांस पीठा) बनाकर खाते है। तीसरा दिन को 'साकरात माहां' कहते है उस दिन सुबह पूर्वजों के नाम भीतार में हाडी चोडोर (हाड़ीया पूजा) के साथ गुड़ पीठा भी पूजा करते है, परिवार के सभी सदस्य नये कपड़े पहनते हैं एवं नये नये व्यजन का स्वाद लेते है। ठीक शाम के समय आतु माँझी बाबा (ग्राम माँझी बाबा) द्वारा बेझा तुञ (तीरांदाज) का आयोजान किया जाता है। चौथा दिन को 'आखान माहां' कहते है, संताल समुदाय उस दिन किसी काम को शुरू करना शुभ माना जाता है। नये घर के लिए बुनीयाद ला (शिलान्यास), सीयुग् (हल जोतना), नावा बाहु ञेल (शादी के लिए कन्या देखना), डागरी दाग् (बैल को दागना)

जैसे कामों संपन्न करते हैं। पाँचवा तथा अंतिम दिन को 'गाड़ी एनेज माहां' कहते है। उस दिन गांवों के नौजवान हो या बुढ़ा एक अलग वेष धारण कर गाँवों के प्रत्येक आँगन या द्वार पर नाचते और गाते हैं। वे खुद भी हँसते हैं और दूसरों को भी हँसते हैं। यह एक तरह नाटक के नमूने जैसे लगते हैं।

संताली नाटक का विकास :

संताली नाटक लिखने की परंपरा का सूत्रपात माँझी रामदास टुडू 'रास्का' से ही मानना चाहिए। क्योंकि उनके लिखित 'खेरवाड़ बोंसो धोरोम नाट' 1880 ई. में आपने गाँव काड़वाकाटा में प्रस्तुत किया गया था। लेकिन इसको पुस्तक के रूप में प्रकाशित नहीं किया गया। उसके बाद से सभी संताल इलाका में नाटक लिखना प्रारंभ किया गया। उस समय के नाटककारों ने पौराणिक, इतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्टभूमि के आधारित पर लिखी गई है।

संताली नाटकों के विकास की परम्परा का अध्ययन करने हेतु उसे निम्नलिखित कालों में विभाजित किया जा सकता है-

1. प्रारम्भिक काल - सन् 1942 ई. से सन् 1974 ई. तक, अर्थात खेलोंड युग या रघुनाथ मुर्मू युग का नाटक।
2. मध्य काल - सन् 1975 ई. से सन् 2002 ई. तक, अर्थात (गायान युग या जादुनाथ टुडू युग का नाटक।
3. आधुनिक काल - सन् 2003 ई. से अब तक, अर्थात नाहाग युग का नाटक।

1. प्रारम्भिक काल के संताली नाटक (सन् 1942 ई. से सन् 1974 ई. तक) :

संताली साहित्य में सबसे पहले ओल गुरु ,गोमके गुरु ,पारसी सिंञ चाँदोरघुनाथ पंडित , मुर्मू ने नाटक लिखना शुरू की है। उनकी रचित नाटक बिदु-चांदान (1942), खेरवाड़ बीर (1952) ,दाड़ेगे धोन (1966) और सिदो कान्हु सांताड़ हुल (1996) में प्रकाशित किया गया है। इस काल के प्रमुख नाटककारों में सोलेमोन मुर्मू, श्याम सुंदर हेम्ब्रम, रूप नारायण टुडू, लोसो सोरेन कृष्ण चंद्र टुडू आदि प्रमुख थे। सोलेमोन मुर्मू का 'कोचे कांडबा' (1945), श्याम सुंदर हेम्ब्रम का 'छोतोर पुती किस्कू राज' (1948), रूप नारायण टुडू का 'आले आतू' (1952), लोसो सोरेन का 'ओलोङ' (1956) कृष्ण चंद्र टुडू का जुरी खातिर (1971) इत्यादि नाटकों की रचना की गयी।

2. मध्य काल के संताली नाटक (सन् 1975 ई. से सन् 2002 ई. तक) : आकाशवाणी कोलकाता केंद्र से 15 अगस्त 1975 ई. को जदुनाथ

टुडू के प्रयास से संताली आखड़ा शुरू किया गया। इस संताली आखड़ा से निर्मल चंद्र गुहा रचित तथा हरो प्रसाद मुर्मू द्वारा अनुवादित नाटक 'महेश'19 सितंबर था। गया किया प्रसार को 1975जदुनाथ टुडू ने सन् में .ई 1975ही खेरवाल' स्थापित कोलकाता 'ओपेराकिया गयातथा , इस ओपेरा से सर्वप्रथम किया मंचन का नाटक 'बीर-लो'गया था। इस काल के प्रमुख नाटककारों में भैया हाँसदा, सहदेव माराण्डी, गुलिया हेम्ब्रम, शिवलाल किस्कू, ठाकुर मनिन्द्र हाँसदा आदि प्रमुख थे। भैया हाँसदा का 'होडा: बापला' (1975) , सहदेव माराण्डी का 'हासा आर भाषा' (1977), गुलिया हेम्ब्रम का 'धोरोम होर' (1980), शिवलाल किस्कू का 'नावा होर' (1980), ठाकुर मनिन्द्र हाँसदा का 'बादोली कोंयडा' (1980) इत्यादि नाटकों की रचना की गयी।

3 नाटक संताली के काल आधुनिक ((सन् तक अब से .ई 2003) : संताली भाषा 2003 दिसंबर 22ई. को लोक सभा से, 23 दिसंबर 2003

ई. को राज्य सभा से और 7 जनवरी 2004 ई. को भारत के राष्ट्रपति हस्ताक्षर के बाद भारत संविधान के आंठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। सन् 2003 ई. में खेरवाड़ सोरेन (कलिपदो सोरेन) द्वारा लिखित नाटक 'चेदरे चिकायेना' को सन् 2007 ई. में साहित्य एकडेमी द्वारा अवार्ड प्रदान किया गया। इस काल के प्रमुख नाटककारों में ज्ञान चाँद टुडू, कृष्ण चंद्र टुडू, सुचाँद हाँसदा, मोदन मोहन टुडू आदि प्रमुख हैं। ज्ञान चाँद टुडू का 'जोनो: मुठी रे झुनका' (2003), कृष्ण चंद्र टुडू का 'बीर बाजाल सोरेन' (2003), 'सिरजोन' (2003), सुचाँद हाँसदा का 'साँवता ओझा' (2004), मोदन मोहन टुडू का 'खेलोण्ड' (2004) इत्यादि नाटकों की रचना की गयी।

निष्कर्ष :

संतालों द्वारा बोली जानी वाली भाषा को संताली भाषा कहते हैं। संताली भाषा के साहित्य को संताली साहित्य कहते हैं। संताली भाषा एक प्राचीन भाषा में से एक हैं। यह भारत संविधान के आंठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषा है। उनकी साहित्य काफी समृद्द हैं। संताली नाटक का उद्भव जब मानव समाज शिकार आवस्था में जीवन यापन करते थे उन्होंने अपने जीवन के साथ घटित सभी घटनाओं को अपने दिल से महसूस किया और बहुत निकट अपनी आंखों से देखा है, अपने कानों से सुना है, तथा अपनी मानसिक आत्मा को शांति के लिए अपने देवी समक्ष के आयो जाहेर और बुरु माराङ देवता- खुशियों की घटनाओं उन उन्हें है। की प्रार्थना, दुखों, चिंताओं, निराशाओं, उपस्थितियों के बारे में महसूस किया। उन्होंने खुशियों पर हँसे और शोक में आँसू बहाये हैं। उन्होंने जंगली जानवरों से बचने के लिए तीर के जीविका वे लड़े। से धनुष- है। लगता जैसा खेल एक का घटनाओं गई की अनुभव में जीवन सब यह थे। करते खेती लिए उन्होंने अपनी पहचान बनाए रखने के लिए लोकसंस्कृति-, रीतिसमाज इस किया। निर्माण का समाज लिए के रखने बचाए रिवाजों- की संस्कृति, रीति- रिवाज और परंपराएं विभिन्न नृत्य और संगीत से जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संताली नाटक का उद्भव जीवन में अपने साथ घटित घटनाओं का अनुभवसंस्कृति ,, रीति जैसे गान ,नाच विभिन्न के परंपराएं और रिवाज- स ,एनेजजोङ गिदरा ,आखड़ा सिंगराय ,बाड़ेबूटा चाँपाकिया◌ा◌ंगे बारयात के एनेज गाड़ी ठेंगा ,आखड़ा डाकाव रूम , से माध्यमसंताली नाटक का उद्भव हुआ है। तथा रघुनाथ मुर्मू युग से संताली नाटक का विकास हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ᱢᱚᱱᱰᱚᱞ, ᱫᱷᱤᱨᱮᱱᱫᱽᱨᱚ; ‘ᱥᱟᱱᱛᱟᱲᱤ ᱥᱮᱨᱮᱧ ᱥᱟᱦᱤᱛ ᱨᱮᱱᱟᱜ ᱤᱛᱤᱦᱟᱹᱥ’-Pub. by- Jharkhand Jharokha, Shop No. DG-03, New building, New Market, Ratu Road. Ranchi (Jharkhand) PIN -834001,Ed.-2nd ,Year -2018, pp.-33
2. Mane, Prabhanjan; ‘Interpreting Drama’ Pub.by: ATLANTIC, Publisher & Distributors (P) Ltd., 7/22, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110001, pp.-1
3. टुडू, कृष्ण चंद्र; ‘सानताड़ी तोलास आ.री’– Pub. by Prof Krisna Kutir Rajdoha, Singhbhum, Jharkhand. Ed.-1st Year- 2023, pp.-51
4. मेहता,शिव कुमार (संपादक); पाठक, साकेत कुमार; ‘हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास’ –Pub. by: Parimal Prakashan,17, M.I.G. Baghambari Avash Yojona Allhapur, Prayagraj- 211006. (U.P.) Ed- 1st, Year- 2024, pp.-30
5. मेहता,शिव कुमार (संपादक); पाण्डेय, स्वाति; ‘हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास’ – Pub. by: Parimal Prakashan,17, M.I.G. Baghambari Avash Yojona Allhapur, Prayagraj- 211006. (U.P.) Ed.-1st, Year- 2024, pp.-21
6. मेहता, शिव कुमार (संपादक); पाण्डेय, स्वाति; ‘हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास’– Pub. by: Parimal Prakashan,17, M.I.G. Baghambari Avash Yojona Allhapur, Prayagraj- 211006. (U.P.) Ed.- 1st, Year- 2024, pp.-21
7. मेहता, शिव कुमार (संपादक); साव, विजय कुमार; ‘हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास’– Pub.by: Parimal Prakashan, 17, M.I.G. Baghambari Avash Yojona Allhapur, Prayagraj- 211006. (U.P.) Ed.-1st, Year -2024, pp.-45